भजन

तर्जः- उठ जाग मुसाफिर भोर भई

श्री प्राणनाथ पूर्णब्रह्म ने, सब धर्मो का झगड़ा मिटाया है
है सोई खुदा सोई पूर्णब्रह्म, ये अनोखा ज्ञान सुनाया है

1.) ये दुनियाँ आदि-अनादि से, थी आवागमन के चक्कर में
ब्रह्मज्ञान की अखंड वाणी से, त्रैगुण का फन्द छुड़ाया है
श्री प्राणनाथ पूर्ण ब्रह्म..

2.) सब कहते हैं इक पूर्णब्रह्म, पर है वो कौन मिटा ना भरम
अपनी पहचान बता करके, निजघर का रस्ता बताया है
श्री प्राणनाथ पूर्ण ब्रह्म..

3.) श्री विजयाभिनन्दन प्राणनाथ, नर तन में पधारे हैं साक्षात्
धन कलयुग और धन भरतखंड, जहां आपने फेरा लगाया है
श्री प्राणनाथ पूर्ण ब्रह्म....

4.) हम सुन्दरसाथ हैं अंग उनके,भूले हैं माया का संग करके
हम परमधाम से आये हैं, हम सबको ये समझाया है
श्री प्राणनाथ पूर्ण ब्रह्मा